दो शब्द

प्रत्येक विषय के अध्यापन की सफलता निम्नलिखित तीन बातों पर निर्भर रहती है—

(अ) उस विषय के शिक्षण के प्राप्य उद्देश्यों का निर्धारण।

(ब) उन प्राप्य उद्देश्यों के पूर्ति के साधनों का सुप्रबन्ध।

(स) प्राप्य उद्देश्यों के मापन और मूल्यांकन की प्रक्रिया।

प्रस्तुत पुस्तक इन्ही तीन तत्वों के महत्व को ध्यान मे रखकर लिखी गई है। भारतीय स्कूलों मे समाज अध्ययन के शिक्षण की दुरवस्था खटकने वाली बात है। लेकिन आशा है कि अध्यापकों का मार्ग निर्देशन करने के लिये केन्द्रीय स्तर पर संगठित कुछ संस्थाओं के प्रयत्नों के फलस्वरूप इस दिशा मे सुधार होगा। भारत के कुछ राज्यों ने समाज अध्ययन का शिक्षण उच्च माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य कर दिया है कुछ राज्यों मे अभी इस विषय क्षेत्र को वह स्थल नही मिल सका है जो उसे मिलना चाहिये। लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था मे समाज अध्ययन के पठन पाठन को जब उचित स्थान मिल जायगा तब इस विषय का शिक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण माना जाने लगेगा जितना कि महत्वपूर्ण भाषा अथवा गणित का अध्ययन माना जाता है। उस समय डक्सी तथा एन० सी० ई० आर० टी के प्रयासों की सार्थकता प्रतीत होगी और प्रस्तुत पुस्तक जैसी रचनाओं की उपादेयता निश्चित हो सकेगी।

आशा है मेरी पूर्व कृतियों की भांति प्रस्तुत पुस्तक को भी शिक्षकों, शिक्षार्थियों तथा विद्वानों का स्नेह प्राप्त होगा। यदि विद्वानों को इस पुस्तक मे कोई त्रुटि मिले तो उनके सुझावों का हृदय से स्वागत किया जावेगा।

जुलाई, १९६४ — नाथूराम शर्मा

विषय सूची

: १ :

समाज अध्ययन के अध्यापक से

१ समाज अध्ययन के शिक्षण की सफलता किन किन बातों पर निर्भर रहती है ?

सामाजिक अध्ययन का अध्यापक मारपट्टी से भरी हुई एक ऐसी सड़क जा रहा है जो कहीं तो एकदम ऊपर चढ़ती है और कहीं एकदम नीचे उतर जाती है। यह सड़क उसे ऐसे स्थान की ओर ले जा रही है जिसमें उसे भूत, वर्तमान और भविष्य की व्याख्या करनी है जिसमें उसे राष्ट्र का मार्ग प्रदर्शन, नेतृत्व और संचालन करना है। अतः समाज अध्ययन के शिक्षक को अन्य विषयों के शिक्षकों की अपेक्षा कुछ विशेष जानकारियाँ रखनी हैं। गणित का शिक्षक यदि नई दुनिया में होने वाली आज की गतिविधियों के विषय में कम जानकारियाँ रखता है, विज्ञान का शिक्षक यदि अमरिका की वर्तमान अर्थव्यवस्था से अपरिचित है, भाषा का शिक्षक यदि नेफा की प्राकृतिक दशा को नहीं जानता तो कोई हर्ज नहीं है किन्तु समाज अध्ययन का शिक्षक यदि इनसे अपरिचित है तो उसके लिए इन बातों की जानकारी का न होना अक्षम्य अपराध माना जायगा।

समाज ने अपनी कुछ जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये शिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया है। शिक्षक समाज और इन संस्थाओं के बीच की कड़ी है जो भूत को भविष्य से, भूत को वर्तमान से, शासन को शाला से, समाज को शिक्षा से संयोजित करता है।[1] समाज अध्ययन के शिक्षक के लिए यह कथन ठीक बैठता है। यदि वह समाज और शाला के बीच सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है तो उसमें बृहस्पति का ज्ञान, मनु की नीति और विक्रमादित्य का सा प्रकाश होना चाहिए। लेकिन खेद का विषय है कि न तो समाज अध्ययन का अध्यापक, न समाज, न समाज के कर्णधार, न देश के शिक्षा शास्त्री ही इस ओर ध्यान दे रहे हैं। आप किसी भी विद्यालय में चले आइए समाज अध्ययन के अध्यापक के पास आपको इस विषय के ज्ञान का अभाव दिखाई देगा। ऐसी दुरवस्था का कारण क्या है? हमारे प्रशिक्षण महाविद्यालय? हमारी शिक्षा नीति? हमारे अध्यापक?

---

1 'Within the school as well as in the community the Social Studies teacher is the link between the community and the school the past and the present, the government and the school the citizen and the society.'
Wesley

हमारे प्रशिक्षण महाविद्यालय इसलिए कि वे ऐसे व्यक्तियों को भी जिन्होंने हाईस्कूल में इतिहास अथवा भूगोल का अध्ययन किया है अथवा जिन्होंने इन विषयों को केवल जूनियर हाईस्कूल स्तर तक ही लिया पढ़ा है, समाज अध्ययन का शिक्षण करने की अनुमति दे देते हैं। देवें क्या न ? व्यक्ति जो प्रशिक्षण के लिए सामान्यत प्रवेश लेते हैं ग्रेजुएशन करने के बाद भी ऐसे दो विषय नहीं खोज पाते जिन्हें वे अच्छी तरह जूनियर स्तर अथवा उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ा सकें और समाज अध्ययन ही एक ऐसा विषय उन्हें दिखाई देता है जिसे वे प्रक्टिकल टीचिंग के लिए चुन सकते हैं। विश्वविद्यालयों की नीति इस दुरवस्था के लिए जिम्मेदार इसलिए है कि वह ग्रेजुएशन तक फिक्र ही नहीं करती कि उसे कुछ स्नातकों को शिक्षक भी बनाना है। शिक्षक प्रशिक्षण की नींव उच्च माध्यमिक स्तर के बाद ही पड़ जानी चाहिये और जिस प्रकार विश्वविद्यालय अन्य तकनीकी कार्यों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करते हैं उसी प्रकार क्या शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की जा सकती ? इसके लिए त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स नहीं तयार किया जा सकता जिसमें अन्य विषयों की शिक्षा के साथ साथ उन विषयों के शिक्षण की भी व्यवस्था हो जिनको अध्यापक निम्न अथवा उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाना चाहता है ? कुछ राज्यों के शिक्षा विभागों ने सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की है किन्तु जिस प्रकार हिन्दी विषय पढ़ाने के लिए शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षित किया जाता है क्या समाज अध्ययन को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता ?

समाज अध्ययन का शिक्षक भी इस दुरवस्था का कारण है। वह समझता है कि समाज अध्ययन भूगोल, नागरिक शास्त्र और इतिहास का योगमात्र है। वह ही क्या कुछ राज्यों की माध्यमिक शिक्षा परिषदें इस गलत धारणा का शिकार बनी हुई हैं। यदि समाज अध्ययन का शिक्षक सफलतापूर्वक अपने कार्य का सम्पादन करना चाहता है तो उसे पहले तो सामाजिक अध्ययन के स्वरूप को समझना होगा।

समाज अध्ययन समाज में रहने वाले मनुष्यों और सामाजिक समुदायों के बीच स्थित सम्बन्धों की व्याख्या करता है। ये सम्बन्ध राजनैतिक ऐतिहासिक, आर्थिक और सामाजिक होते हैं अतः समाज अध्ययन के शिक्षक को राजनीति, इतिहास, अर्थ शास्त्र और समाज शास्त्र का भी थोड़ा बहुत ज्ञान रखना जरूरी है। समाज अध्ययन के अध्यापक के लिए इन सम्बन्धित विषयों का ज्ञान प्राप्त करना तो जरूरी है ही साथ ही निम्नांकित बातों की भी जानकारी आवश्यक है —

(i) समाज अध्ययन के शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य
(ii) इन उद्देश्यों की पूर्ति के साधन—पाठ्यक्रम
(iii) अन्य विषयों के साथ समाज अध्ययन का सम्बन्ध
(iv) शिक्षण विधियाँ और प्रयुक्तियाँ
(v) सहायक सामग्री—श्रव्य दृश्य उपकरण

(vi) समाज अध्ययन से सम्बन्धित मूल्यांकन और मापन की विधियाँ

(vii) शिक्षा मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्त

प्रस्तुत पुस्तक मे इन बातो की विवेचना की जायगी। शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये प्रशिक्षण संस्थाओं को ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करना होगा जो कम से कम तीन समाज शास्त्रों मे पूर्ण अधिकार रखते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि यदि ऐसे व्यक्तियों का जिन्होंने हाईस्कूल मे इतिहास अथवा भूगोल का ही अध्ययन किया है समाज अध्ययन का अध्यापन करने की अनुमति न दी जाय। जो व्यक्ति जूनियर हाईस्कूल स्तर पर समाज अध्ययन का अध्यापक होना चाहता है उसे हाईस्कूल मे इतिहास और भूगोल दोनो विषयों को अपना ऐच्छिक विषय के रूप में चुनना होगा। साथ ही वह यदि नागरिक शास्त्र और अर्थ शास्त्र में से एक विषय चुन ले तो और अच्छा है। यदि ऐसा सम्भव न हो तो प्रशिक्षण काल को बढ़ा दिया जाए ताकि उस समय मे इन विषयो का अतिरिक्त ज्ञान दिया जा सके। यदि यह भी सम्भव न हो तो अध्यापक के पास केवल एक ही चारा है। वह यह कि वह अपने शिक्षण काल में इन विषयों का अध्ययन स्वयं करे।

प्रत्येक विषय के शिक्षण के कुछ मूल्य अथवा उद्देश्य होते हैं। इन्ही मूल्यों अथवा उद्देश्यों के कारण उस विषय को पाठ्यक्रम मे स्थान दिया जाता है। कुछ उद्देश्य दूरस्थ होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जिनकी प्राप्ति आसानी से हो सकती है। इन प्राप्य उद्देश्यों का निर्धारण निम्नांकित तीन बातो को ध्यान में रख कर किया जाता है।

(i) समाज की आवश्यकताओं तथा राष्ट्र के दर्शन से

(ii) छात्रों की आवश्यकताओं

(iii) विषय की प्रकृति

राष्ट्र को आवश्यकता है ऐसे नागरिकों की जो वर्तमान प्रजातन्त्र का पोषण कर सकें, उसे जरूरत है ऐसे नागरिकों की जिनकी अभिवृत्ति वैज्ञानिक हो। छात्रों की आवश्यकता है मानव समुदायों के विषय मे जानकारियाँ प्राप्त करने की। अतः छात्र समाज और राष्ट्र की माँगों की पूर्ति के लिए अध्यापक को समाज अध्ययन के व्यापक तथा प्राप्य उद्देश्य निश्चित करने होंगे।

जिन प्राप्य उद्देश्यो का निर्धारण शिक्षा विशारदों अथवा अध्यापकों द्वारा होता है उनकी प्राप्ति का साधन है पाठ्यक्रम। किसी भी शिक्षणिक स्तर के लिए जो जो सीखने के अनुभव निश्चित किये जाते हैं वे सब उन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं। आदर्श स्थिति मे सीखने के इन अनुभवो का सचय और सगठन शिक्षक द्वारा होना है। लेकिन जब समाज अध्ययन का अध्यापक इन अनुभवों अथवा क्रियाओं का स्वयं चुनाव नहीं कर सकता तब शिक्षा विदों अथवा राज्य की माध्यमिक शिक्षा परिषदों को इन अनुभवों अथवा क्रियाओं को सचित और सगठित करना पड़ता है। ऐसी अवस्था मे पाठ्यक्रम कठोर तथा रेजीमेंटेड हो जाता है।

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिये जाने वाले अनुभवों को किस तरीके से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाय। उन तरीकों अथवा विधियों की जानकारी भी शिक्षक के लिए उतना ही आवश्यक है जितनी कि अन्य बातें। ये विधियाँ निश्चित की जाती हैं शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा। अत अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना जरूरी है। तभी वह समझ सकता है कि अमुक शिक्षण विधि का विकास कैसे हुआ है उसमें क्या दोष अथवा गुण हैं। किस विधि को कब और कहाँ प्रयोग में लाना है?[1] कक्षा की सीखी हुई सामग्री कैसे स्थायी बनाई जा सकती है? किस प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग करके पाठ को रोचक बनाया जा सकता है? पाठ्य-पुस्तकों को सामुदायिक सामग्री का उपयोग उसे कब कब करना है? इन बातों की जानकारी भी कम आवश्यक नहीं है।

जिन प्राप्य उद्देश्यों को लक्ष्यीभूत करके शिक्षक ने सामाजिक अथवा नागरिक शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया था उनकी प्राप्ति किसी सत्र अथवा वर्ष के अन्त में हुई है अथवा नहीं इसका जानना तो तभी हो सकती है जब वह प्राप्य उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों और मूल्यांकन के तरीके को जानता हो। अध्याय १० में इस विषय पर सूक्ष्म दृष्टिपात किया जायगा और कुछ प्राप्य उद्देश्यों को ध्यान में रखकर परीक्षा प्रश्नों के उदाहरण प्रस्तुत किये जायेंगे।

हमारा पाठ्यक्रम कितना ही सुगठित एवं उत्तम क्यों न हो सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य कितने ही उच्च क्यों न हों हमारे विद्यालयों में इस विषय के शिक्षण के उपादानों का प्रबन्ध कितना ही अच्छा क्यों न हो, हमारे छात्रों को इस विषय के अध्ययन से उचित लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक हमारे शिक्षकों में बौद्धिक योग्यता, जागरूकता दृष्टिकोण की उदारता सामाजिक सक्रियता और व्यावसायिक योग्यता का समावेश न हो। कारण स्पष्ट है। शिक्षण एक प्रगतिशील व्यवसाय है और यह व्यवसाय तभी सुचारु रूप से चल सकता है जब शिक्षक में बौद्धिक जागरूकता हो। सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के लिए बौद्धिक जागरूकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। वही वर्तमान को अथवा निरंतर बदलने वाले

---

1 It is essential that the teacher who is to achieve success should have a careful study of this phase of educational thought The method that the classroom teacher uses from day to day determines to a great extent his success or failure Consequently he must know about the origin and development of method and also to evaluate critically and use wisely the various methods employed by successful teachers today

Bining & Bining—Teaching Social Studies, pp 46 47

जटिल संसार को समझाने का प्रयत्न कर सकता है। इस कार्य में दक्षता प्राप्त करने का एकमात्र साधन है वर्तमान परिस्थितियों का ज्ञान।[1]

१.२ समाज अध्ययन के अध्यापक की विशिष्ट योग्यताएँ

सामाजिक अध्ययन एक ऐसा व्यापक विषय है जिसमें समस्त मानवीय सम्बन्धों का सन्निवेश रहता है। फलतः इस विषय में इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थ शास्त्र, भूगोल, आधुनिक घटनाएं आदि सभी क्षेत्रों का ज्ञान सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को होना चाहिये। केवल इतिहास, भूगोल अथवा नागरिक शास्त्र का ज्ञाता ही सामाजिक अध्ययन का कुशल अध्यापक नहीं हो सकता उसे उन सब विषयों, उन सब बातों का ज्ञान आवश्यक है जो मानवीय सम्बन्धों की अपेक्षा करती हैं। साहित्य का अध्यापक यदि सामाजिक रीति रिवाजों का ज्ञान नहीं रखता तो उसे अपने विषय के अध्यापन में कोई कठिनाई नहीं हो सकती किन्तु सामाजिक अध्ययन का अध्यापक कक्षा ६ का इतिहास पढाते समय शकुन्तला नाटक की कथावस्तु और उस समय की सामाजिक अवस्था का ज्ञान नहीं रखता तो कक्षा में मुँह की खा सकता है। इसी प्रकार अन्य किसी विषय का अध्यापक का ज्ञान यदि उसी विषय तक सीमित है तो उसे अध्यापन कार्य में कोई कठिनाई नहीं हो सकती किन्तु सामाजिक अध्ययन के अध्यापक की बौद्धिक योग्यता एक विषय तक सीमित नहीं रह सकती। उसको इतिहास की, भूगोल की, समाज शास्त्र की और नागरिक शास्त्र की बुनियादी बातों का पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है।

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक और सामयिक घटनाओं का ज्ञान

इन विषयों के अतिरिक्त सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को समकालीन घटनाओं का ज्ञान होना चाहिये। उसे इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उसके गाँव, नगर, प्रदेश, देश और संसार में कौन कौन सी नई बातें हो रही हैं। इस जानकारी को प्राप्त करने के साधन समसामयिक पत्र पत्रिकायें हो सकती हैं। परिवर्तनशील इस जटिल विश्व की व्याख्या भी तभी हो सकती है जब वर्तमान जीवन में नित्यप्रति होने वाली घटनाओं का पूर्ण ज्ञान अध्यापक को हो। अन्य विषयों के अध्यापकों को इन विषयों की जानकारी की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को। यदि गणित का अध्यापक रोज समाचार पत्र नहीं पढ़ता, यदि साहित्य का अध्यापक पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन नहीं करता तब भी उसका कार्य चल सकता है किन्तु भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र और खासकर सामाजिक

1 Teaching is a progressive occupation and the teacher must be a student Although it is true for all teachers but it is specially true for the one who teaches the Social Studies It is he who interprets this present everchanging complex world to the pupil To do this the teacher must understand the present with its multitudinous perplexing problems

Bining and Bining—Teaching of Social Studies pp 199

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दिये जाने वाले अनुभवों को किस तरीके से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाय। इन तरीकों अथवा विधियों की जानकारी भी शिक्षक के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी कि अन्य बातें। ये विधियाँ निश्चित की जाती हैं शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा। अतः अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना जरूरी है। तभी वह समझ सकता है कि अमुक शिक्षण विधि का विकास कैसे हुआ है उसमें क्या दोष अथवा गुण हैं। किस विधि को कब और कहाँ प्रयोग में लाना है?[1] बच्चों की सीखी हुई सामग्री कैसे स्थायी बनाई जा सकती है? किस प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग करके पाठ को रोचक बनाया जा सकता है? पाठ्य-पुस्तकों का सम्पूरक सामग्री का उपयोग उसे कब-कब करना है? इन बातों की जानकारी भी कम आवश्यक नहीं है।

जिन प्राप्य उद्देश्यों को लक्ष्यीभूत करके शिक्षक ने सामाजिक अथवा नागरिक शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया था उनकी प्राप्ति किसी सत्र अथवा वर्ष के अन्त में हुई है अथवा नहीं इसकी जानकारी तभी हो सकती है जब वह प्राप्य उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों और मूल्यांकन के तरीके को जानता हो। अध्याय १० में इस विषय पर सूक्ष्म दृष्टिपात किया जायगा और कुछ प्राप्य उद्देश्यों को ध्यान में रखकर परीक्षा प्रश्नों के उदाहरण प्रस्तुत किये जायेंगे।

हमारा पाठ्यक्रम कितना ही सुगठित एवं उत्तम क्यों न हो सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य कितने ही उच्च क्यों न हों हमारे विद्यालयों में इस विषय के शिक्षण के उपादानों का प्रबन्ध कितना ही अच्छा क्यों न हो हमारे छात्रों को इस विषय के अध्ययन से उचित लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक हमारे शिक्षकों में बौद्धिक योग्यता, जागरूकता, दृष्टिकोण की उदारता सामाजिक सक्रियता और व्यावसायिक योग्यता का समावेश न हो। कारण स्पष्ट है। शिक्षण एक प्रगतिशील व्यवसाय है और यह व्यवसाय तभी सुचारु रूप से चल सकता है जब शिक्षक में बौद्धिक जागरूकता हो। सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के लिए बौद्धिक जागरूकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। वही वर्तमान की अथवा निरन्तर बदलने वाले

---

1 "It is essential that the teacher who is to achieve success should have a careful study of this phase of educational thought The method that the classroom teacher uses from day to day determines to a great extent his success or failure Consequently he must know about the origin and development of method and also to evaluate critically and use wisely the various methods employed by successful teachers today"

Bining & Bining—Teaching Social Studies, pp 46 47

जटिल संसार को समझाने का प्रयत्न कर सकता है। इस कार्य में दक्षता प्राप्त करने का एकमात्र साधन है वर्तमान परिस्थितियों का ज्ञान।[1]

१ २ समाज अध्ययन के अध्यापक की विशिष्ट योग्यताएँ

सामाजिक अध्ययन एक ऐसा व्यापक विषय है जिसमें समस्त मानवीय सम्बन्धों का सन्निवेश रहता है। फलतः इस विषय में इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थ शास्त्र, भूगोल, आधुनिक घटनाएँ आदि सभी क्षेत्रों का ज्ञान सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को होना चाहिये। केवल इतिहास, भूगोल अथवा नागरिक शास्त्र का ज्ञाता ही सामाजिक अध्ययन का कुशल अध्यापक नहीं हो सकता उसे उन सब विषयों, उन सब बातों का ज्ञान आवश्यक है जो मानवीय सम्बन्धों की अपेक्षा करती हैं। साहित्य का अध्यापक यदि सामाजिक रीति रिवाजों का ज्ञान नहीं रखता तो उस अध्ययन विषय के अध्यापन में कोई कठिनाई नहीं हो सकती किन्तु सामाजिक अध्ययन का अध्यापक कक्षा ६ का इतिहास पढ़ाते समय शकुन्तला नाटक की कथावस्तु और उस समय की सामाजिक अवस्था का ज्ञान नहीं रखता तो कैसा मुँह की खा सकता है। इसी प्रकार अन्य किसी विषय का अध्यापक का ज्ञान यदि उसी विषय तक सीमित है तो उसे अध्यापन कार्य में कोई कठिनाई नहीं हो सकती किन्तु सामाजिक अध्ययन के अध्यापक की बौद्धिक योग्यता एक विषय तक सीमित नहीं रह सकती। उसको इतिहास की, भूगोल की, समाज शास्त्र की और नागरिक शास्त्र की बुनियादी बातों का पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है।

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक और सामयिक घटनाओं का ज्ञान

इन विषयों के अतिरिक्त सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को समकालीन घटनाओं का ज्ञान होना चाहिये। उसे इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उसके गाँव, नगर प्रदेश, देश और संसार में कौन कौन सी नई बातें हो रही हैं। इस जानकारी को प्राप्त करने के साधन समसामयिक पत्र पत्रिकायें हो सकती हैं। परिवर्तनशील इस जटिल विश्व की व्याख्या भी तभी हो सकती है जब वर्तमान जीवन में नित्य प्रति होने वाली घटनाओं का पूर्ण ज्ञान अध्यापक को हो। अन्य विषयों के अध्यापकों का इन विषयों की जानकारी की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को। यदि गणित का अध्यापक रोज समाचार पत्र नहीं पढ़ता, यदि साहित्य का अध्यापक पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन नहीं करता तब भी उसका कार्य चल सकता है किन्तु भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र और खासकर सामाजिक

---

1 Teaching is a progressive occupation and the teacher must be a student Although it is true for all teachers but it is specially true for the one who teaches the Social Studies It is he who interprets this present everchanging complex world to the pupil To do this the teacher must understand the present with its multitudinous perplexing problems

Bining and Bining—Teaching of Social Studies pp 199

अध्ययन के अध्यापक को इनका अध्ययन करना होगा। इसीलिए विनिंग ने सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को निरन्तर विद्यार्थी बने रहने का आदेश दिया है। उसमे सदव सामाजिक चेतनता का अंग बना रहना चाहिए। समाज और सभ्यता का विकास किस प्रकार हुआ और हो रहा है इसका पूर्ण ज्ञान सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को होना जरूरी है। यह तभी हो सकता है जब वह समकालीन घटनाओं का वेत्ता हो।

दार्शनिक विचारधारायें भी निरंतर बदलती रहती हैं। अत आज से २० वर्ष पूर्व प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जो कुछ पढ़ाया जाता था वह अब नहीं पढ़ाया जाता क्योंकि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हो गया है। शिक्षक को इन परिवर्तनों की जानकारी के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। सामाजिक अध्ययन पर DEPSE जो कुछ काय कर रहा है उससे अवगत कराया जा सकता है।

सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक गुण

सामाजिक अध्ययन के सफल शिक्षण के लिए अध्यापक में उन गुणों अथवा विशेषताओं का होना भी अनिवार्य है जिन गुणों अथवा विशेषताओं का वह विकास अपने छात्रों में सामाजिक अध्ययन का अध्यापन करके करना चाहता है। हृदय की उदारता सहिष्णुता, मत्रीभाव सहानुभूति आत्म निर्भरता धय आदि ऐसे ही गुण हैं जिनका विकास हम अपने छात्रों में करते हैं। यह काय तभी सफल हो सकता है जब हम में ये गुण वर्तमान हों।

सामाजिक अध्ययन का शिक्षण इस उद्देश्य से किया जाता है कि बालकों में उदारता, निष्पक्षता व भ्रातृत्व आदि के भाव उत्पन्न हो सकें। बालकों का दृष्टिकोण उदार उस समय हो सकता है जब उनके सम्मुख आदर्श रूप में रहने में अध्यापक का दृष्टिकोण उदार हो। यदि शिक्षक की मनोवृत्ति संकीर्ण है यदि उसके शिक्षण में जातिगत पक्षपात भरे हुए हैं यदि वह दलगत तथा धर्मगत संस्कारों का शिकार बना हुआ है तो उसके छात्रों में भी यही दुर्गुण उत्पन्न हो सकते हैं। अत सामाजिक अध्ययन का शिक्षण ऐसे व्यक्तियों को न सौंपा जाय जो उदार हृदय मिलनसार और मृदुभाषी न हों।

हृदय की उदारता का सहयोगी गुण है सहनशीलता और धय। अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति सहिष्णुता का भाव हृदय की विशालता का द्योतक होता है। समाज में शांति चाहने वाला व्यक्ति दूसरों को आत्मवत देखता है। इस प्रकार सहनशीलता हृदय की उदारता सहिष्णुता, धय आदि गुणों का समावेश सामाजिक अध्ययन के शिक्षक में होना आवश्यक है।

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक और समाज शिक्षा

यदि बालकों को सामाजिक जीवन सामाजिक व्यवस्था सामाजिक रीति रिवाज आदि का सजीव ज्ञान देना है, और उनको क्रिया करके सिखाना है तो शिक्षक

को स्थानीय सामाजिक कार्यों में स्वेच्छापूर्वक एवं सक्रिय भाग लेना होगा। गाँव तथा नगर के त्यौहारों, उत्सवों और अन्य रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भाग लेने वाला शिक्षक ही अपने छात्रों को इस प्रकार का ज्ञान दे सकता है।

गाँव की सफाई ग्रामीणों के लिए शारीरिक और सांस्कृतिक उत्थान के कार्यों में उन सभी अध्यापकों को भाग लेना चाहिए जो जूनियर हाई स्कूलों में सामाजिक अध्ययन का प्रशिक्षण कर रहे हैं। नहीं तो वे कोरे आदर्श बघारने वाले व्यक्तियों की तरह बालकों में सामाजिक कार्यों में भाग लेने की प्रेरणा उत्पन्न नहीं कर सकेंगे। विद्यालय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। महत्वपूर्ण अंग ही नहीं समाज का लघु रूप है। समाज और विद्यालय के इस सम्बन्ध को अक्षुण्ण बनाये रखने का उत्तरदायित्व साहित्य, गणित और विज्ञान के शिक्षकों पर भले ही न हो, किन्तु समाज अध्ययन का शिक्षक इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकता क्योंकि वह मूल रूप से समाज और विद्यालय के बीच की कड़ी का काम करता है। यदि वह चाहे तो स्कूल का समाज से इस प्रकार का गठबंधन कर सकता है कि दोनों एक उद्देश्य लेकर चल सकें। उस समाज की व्यवस्था सुचारु रूप से चलाने वाले ऐसे नागरिकों को उत्पन्न करना है जो भारतीय नागरिक के अधिकारों और उत्तरदायित्वों को भली प्रकार समझते हों, जो गणतन्त्र की रक्षा तथा उन्नति में पूरी तरह से लग सकें, और जो सबके साथ सहयोग से कार्य करके समाज का उन्नयन कर सकें। यह तभी हो सकता है जब सामाजिक अध्ययन का शिक्षक और उसके छात्र सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग लें। समाज शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चलाने में सामाजिक अध्ययन का शिक्षक सहयोग दे सकता है। जिस प्रकार वह अपने बालक और बालिकाओं को सामाजिक विषय की जानकारी दे सकता है उसी प्रकार अपने भाई और बहिनों को ऐसी शिक्षा देकर देश का कल्याण कर सकता है।

पेशेवर कौशल—सामाजिक अध्ययन के शिक्षक में इन गुणों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी गुण या योग्यताएँ भी होनी चाहिये जो उसे अपने व्यवसाय को ठीक तरह से चलाने में मदद भी दे सकें। इन योग्यताओं में शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा दर्शन पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षण विधि, प्रायोगिक शिक्षा आदि का ज्ञान आवश्यक है। सामाजिक अध्ययन की आधारभूत बातों को बालकों और किशोरों के सम्मुख सुबोध रूप में रखना तभी सम्भव हो सकता है जब शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को हो। समाज अध्ययन में ऐसी विधियों का प्रयोग करना है जिनसे छात्रों को सामाजिक सम्बन्धों को परखने और समझने का अवसर मिल सके। इस तरह हम देखते हैं कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के लिए व्यावसायिक कला में प्रशिक्षित होना जरूरी है। शिक्षा विभाग ने जूनियर हाई स्कूल स्तर पर नार्मल, जे० टी० सी० तथा माध्यमिक स्तर पर बी० एड०, बी० टी०, एल० टी० आदि प्रशिक्षण सम्बन्धी योग्यताओं को अनिवार्य कर दिया है। किन्तु एक बार शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त होने पर भी सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को

शिक्षण सम्बन्धी नये विचारों को ग्रहण करना आवश्यक हो जाता है। ये विचार प्रसार सेवा विभाग द्वारा प्रसारित होते रहते हैं। सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों को उनसे लाभ उठाते रहना चाहिए।

नागरिक शास्त्र का अध्यापक

नागरिक शास्त्र के अध्यापक में अन्य वही गुण होने चाहिये जो समाज अध्ययन के अध्यापक के लिए गिनाये गये हैं। तब भी उसमें कुछ विशेषताएं होनी चाहिये जो अन्य में बालकों के लिए इतनी आवश्यक नहीं है।

विषय पाण्डित्य और आदर्श नागरिक—नागरिक शास्त्र का आदर्श अध्यापक होने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि अध्यापक बहुत राजनीतिक तथा सामाजिक सिद्धान्तों का पण्डित हो। परन्तु उसका आदर्श नागरिक होना आवश्यक है क्योंकि बच्चे अपनी स्वाभाविक अनुकरण प्रवृत्ति के कारण अध्यापक की क्रियाओं का ही अनुकरण करते हैं अतः जो अध्यापक आदर्श नागरिक की भाँति समाज में व्यवहार करता है वही अनुकरणीय है।

प्रजातन्त्र में विश्वास—उसे प्रजातन्त्र का पूर्ण विश्वास हो। विद्यालय की साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं का उत्तरदायित्व सम्भालने की आशा है क्योंकि विद्यार्थी समूह को नागरिकता की शिक्षा सामूहिक अथवा सामाजिक कार्यों में भाग लेने में आती है। इसलिये जहाँ तक हो सके नागरिक शास्त्र का अध्यापक विद्यालय और समाज में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर बालकों को प्रजातन्त्रात्मक प्रणालियों का क्रियात्मक ज्ञान दे।

नेतृत्व का आदर्श—आज देश के सामने अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ प्रस्तुत हैं जिनका हल योग्य एवं श्रेष्ठ नेताओं द्वारा हो सकता है जो आर्थिक राजनैतिक सामाजिक धार्मिक उलझनों को समझ सकते हैं और इन समस्यापूर्ण स्थितियों में नेतृत्व ग्रहण कर सकते हैं। नागरिक शास्त्र का अध्यापक यदि देश में ऐसे नेता पैदा करना चाहता है तो उसे स्वयं नेतृत्व का आदर्श होना चाहिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1.1 How can teaching of Social Studies be made more effective in Indian schools?

1.2 Discuss the qualifications of the Social Studies teacher.
(Agra B. T. 1961)

: २ :

समाज अध्ययन है क्या ?

२ १ समाज अध्ययन का आधुनिक स्वरूप (Modern Concept of Social Studies)

सामाजिक अध्ययन के विषय में भ्रमात्मक विचारधारा—सामाजिक अध्ययन के स्वरूप के विषय में निम्नवों में भ्रमात्मक विचार फैल हुए हैं। इसका कारण यह है कि भारतीय विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का प्रचलन भूगोल, इतिहास एवं नागरिक शास्त्र की शिक्षा के प्रचलन के बाद हुआ है। कुछ शिक्षक और शिक्षा विभाग के अधिकारी भी सामाजिक अध्ययन को समाज शास्त्र (Social Science) नागरिक शास्त्र समाज सेवा आदि का पर्यायवाची मानते हैं और कुछ उसे इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र का योग मानकर चलते हैं।

समाज शास्त्र और सामाजिक अध्ययन में अंतर—सामाजिक अध्ययन समाज शास्त्र से भिन्न है। समाज शास्त्र या समाज विज्ञान का उद्देश्य वयस्कों के ज्ञान कोष में वृद्धि करना है किन्तु सामाजिक अध्ययन का लक्ष्य बालकों के उचित विकास में सहयोग देना है। समाज विज्ञान मानवीय सम्बन्धों एवं क्रियाओं का सैद्धान्तिक रूप प्रस्तुत करता है किन्तु सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों एवं क्रियाओं का व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत करता है। इसलिए समाज शास्त्र अमूर्त, गूढ़ और जटिल बन जाया करता है, किन्तु सामाजिक अध्ययन में सरलता रोचकता एवं बालकों के उपयुक्त व्यावहारिकता का समावेश रहता है। सामाजिक अध्ययन को समाज शास्त्र का सरलतम रूप कह सकते हैं क्योंकि उसका विषय वस्तु बालकों के बौद्धिक स्तर के अनुकूल होती है।

सामाजिक अध्ययन जिस प्रकार समाज शास्त्र से भिन्न है उसी प्रकार इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र के योग से भी भिन्न माना जा सकता है। समानता केवल इस बात में है कि सामाजिक अध्ययन अपनी विषय वस्तु इन स्रोतों से संकलित करता रहता है। इसलिए शिक्षकों में भ्रम उत्पन्न हो जाता है कि यह विषय उनके ही समकक्ष अथवा योग मात्र है।

सामाजिक अध्ययन वस्तुतः एक ऐसा अध्ययन है जिसके द्वारा हम छात्रों को मानवीय सम्बन्धों का ज्ञान दे सकते हैं। मानवीय सम्बन्धों से हमारा तात्पर्य उन सम्बन्धों से है जो मानव और अन्य समुदायों एवं संस्थाओं के बीच उपलब्ध हुआ करते हैं। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन सामाजिक सम्बन्धों को समझने और पहिचानने

म सहायक होता है। वह मानव जीवन के अधिक समीप है अत शिक्षा का मानव से समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न करता है। सामाजिक प्रक्रियाएँ सामाजिक व्यवस्थायें एवं सामाजिक सम्बन्ध ही सामाजिक अध्ययन के मूल म स्थित रहते हैं।

सामाजिक सम्बन्ध—सामाजिक अध्ययन निम्नलिखित संस्थाओं से सम्बन्ध रखता है —

(१) परिवार
(२) समुदाय
(३) धर्म
(४) राज्य

सामाजिक अध्ययन इन संस्थाओं के आपसी सम्बन्धों की व्याख्या करता है और व्यक्ति पर उनकी प्रतिक्रिया व फलस्वरूप प्राप्त प्रभावों का अध्ययन करता है। इन सम्बन्धों की व्याख्या तथा व्यक्ति पर उनके प्रभाव का विश्लेषण इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र आदि शास्त्र भी करते हैं किन्तु वे मानव सम्बन्ध के एक विशेष पक्ष की ही व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए नागरिक शास्त्र राजनैतिक संस्थाओं की व्याख्या करता है। आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि छात्रों का सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्ध का ज्ञान सीमित क्षेत्रों में ही दिया जाय। छात्रों को सफल नागरिक बनाने के लिए सभी प्रकार के मानवीय सम्बन्धों का पूर्ण ज्ञान देना होगा, समाज तथा उसके नाना रूपों तथा पक्षों को समझाना होगा। यह तभी सम्भव है जब मानव सम्बन्धों के विभिन्न पक्षों की व्याख्या करने वाले सभी विषयों का समन्वय प्रस्तुत किया जाय।

२ २ सामाजिक अध्ययन का समन्वित रूप (Social Studies as an Integrated Subject)

सामाजिक अध्ययन का नवीनतम रूप सर्वोच्च माना जा सकता है क्योंकि इसकी विषय-वस्तु में इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र भूगोल आदि विभिन्न विषयों की सामग्री एकत्रित ही नहीं की जाती उसका समन्वय किया जाता है और इस प्रकार समन्वय किया जाता है कि वह अपना अस्तित्व भी कायम रखती है, साथ ही एक विशेष ज्ञान क्षेत्र की ओर संकेत भी करती है जिसमें सामाजिक उपकरणों को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है और जो मानव समाज के समस्त मानवीय सम्बन्धों को आवृत्त करता है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन एक क्षेत्र है न कि एक विषय। इस क्षेत्र म विचरण करने वाला व्यक्ति न अमानवीय और न असामाजिक कार्यों म भाग लेता है जिनमें नागरिक शास्त्र एवं समाज शास्त्र के विद्यार्थी प्राय भाग लिया करते हैं क्योंकि उन्हें सामाजिक सम्बन्धों और उत्तरदायित्वों का ज्ञान नहीं होता।

सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से समन्वय क्यों ?

इतिहास भूगोल और नागरिक शास्त्र को अलग अलग पढ़ाने से निम्नलिखित दोष उत्पन्न हो जाते हैं

(१) छात्रों का समुचित विकास नहीं होता इन विषयों में असामयिक विशेषज्ञता भले ही उत्पन्न हो जाय किन्तु जटिल सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का ज्ञान उन्हें तभी हो सकता है जब सामाजिक अध्ययन को व्यवस्थित क्रम से पढ़ाया जाय।

(२) निम्न माध्यमिक स्तर पर जो इतिहास पढ़ाया जाता है वह मानव समाज का ज्ञान न देकर कुछ व्यक्तियों के जीवन पर ही प्रकाश डालता है। वह छात्रों को यह बताने का प्रयत्न नहीं करता कि प्राचीन में मनुष्य समाज का जीवन किस प्रकार का था। इसी प्रकार जितना भौगोलिक ज्ञान इस स्तर पर छात्रों को दिया जाता है उससे वे अपने वातावरण को समझने का प्रयत्न करते हैं किन्तु मानव जीवन पर वातावरण के प्रभाव को समझ नहीं पाते। यह प्रभाव मानव तथा वातावरण की प्रतिक्रिया का ज्ञान छात्रों को हम उच्च माध्यमिक स्तर पर ही देते हैं इससे पूर्व नहीं। नागरिक शास्त्र का उतना ज्ञान जो इस स्तर पर छात्रों को दे पाते हैं वह विशुद्ध नागरिक वृत्ति उत्पन्न नहीं करता। वह अधिकारी वर्ग तथा सरकार की क्रियाओं तक ही सीमित रहता है।

(३) इन सभी विषयों को अलग अलग से पढ़ाने पर कई महत्वपूर्ण तथा अस्पष्ट भ्रान्तियाँ रह जाती हैं। वह एक विचार को प्राप्त तो कर सकता है किन्तु उसकी प्रयुक्ति के अवसर न मिलने के कारण वह अव्यावहारिक ज्ञान की ही प्राप्ति कर पाता है।

सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु का कुछ अंश इतिहास से, कुछ भूगोल से कुछ अर्थशास्त्र से और कुछ राजनीति से सम्बन्ध रखता है क्योंकि हमारे समाज का वर्तमान ढाँचा हमारी प्राचीन सभ्यता हमारी संस्थाओं और हमारी शासन पद्धतियों से प्रभावित होता है। हमारा भोजन, हमारे वस्त्र हमारे रीति रिवाज हमारी भौगोलिक परिस्थितियों की उपज हुआ करते हैं। इस प्रकार हमारे सामाजिक सम्बन्धों के मूल में हमारा इतिहास और भूगोल छिपा रहता है। यदि हम अपने सुकुमार बालकों को इन सामाजिक सम्बन्धों का ज्ञान देना है यदि उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाने की प्रेरणा पैदा करनी है तो इतिहास और भूगोल को समाज शास्त्र और राजनीति को उनके मूल रूप में पढ़ाने की इतनी अधिक जरूरत नहीं है जितनी कि सामाजिक अध्ययन को। हम ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन कराते हैं, भौगोलिक परिस्थितियों एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का ज्ञान देते हैं इसलिए कि बालक ऐसे अध्ययन के द्वारा अपने पूर्व ज्ञान से नाता जोड़ सके, अपने गाँव शहर को दूसरे गाँवों और शहरों से सम्बद्ध कर सके, अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का दूसरों के परिवारों, समाजों एवं राष्ट्रों से सम्बन्ध स्थापित कर सके।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक अध्ययन वह माला नहीं है जिसमें इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र एक सूत्र में

पिरो दिये गए हो¹ किन्तु वह एक ऐसा विषय है जिसकी सीमाएं सतत बदलती रहती हैं। इतिहास भूगोल और नागरिक शास्त्र की विषय वस्तुएं पूर्व निश्चित होती हैं किन्तु सामाजिक अध्ययन के विषय में यह बात लागू नहीं होती। इस विषय की विषय वस्तु को बालक अपने वातावरण में दैनिक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सीखता है। अतः सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में बालक के दैनिक जीवन की क्रियाओं और अनुभवों का संकलित किया जाता है।

दैनिक जीवन के सभी अनुभव सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु का निर्माण करते हैं। इन अनुभवों को इतिहास भूगोल नागरिक शास्त्र और समाज शास्त्र की भाषा में अलग से भी समझाया जा सकता है जैसा कि देश के कुछ राज्यों में अब तक किया जा रहा है और उनको उचित रूप से समन्वित करके भी पढ़ाया जा सकता है जैसा कि केरल राज्य में। मानव जीवन के ऐतिहासिक स्वरूप को समझाने के लिए कभी कभी अध्यापक छात्रों को अतीत की ओर ले जाता है किन्तु स्थानीय तथा सामयिक जीवन तथा वर्तमान सामाजिक ढांचे से उसका सम्बन्ध विच्छेद नहीं करता। इतिहास का अध्यापन भी वह वर्तमान सामाजिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही करता है।

जिन प्रान्तों में सामाजिक अध्ययन का शिक्षण इस नवीन रूप में नहीं किया जाता किन्तु उसके संघीय रूप को ही स्वीकार किया जाता है अर्थात वह इतिहास भूगोल और नागरिक शास्त्र का योगफल माना जाता है उन प्रान्तों में भी इन विषयों का अध्यापन इस प्रकार किया जा सकता है कि सामाजिक अध्ययन के वास्तविक अर्थ का लोप न हो।

उदाहरण के लिए इतिहास में अकबर के विषय में अध्ययन करते समय अध्यापक अकबर द्वारा प्रचारित दीन इलाही धर्म सैनिक संगठन और राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के प्रयासों पर प्रकाश डाल सकता है। इसी प्रकार भूगोल में फसलों का वर्णन करते समय मानवी भोजन सम्बन्धी आधारभूत आवश्यकताओं द्वारा के पासपड़ौस के व्यक्तियों के भोज्य पदार्थ भारत और संसार के अन्य देशों के लोगों के भोज्य पदार्थों पर प्रकाश डाल सकता है। वह भोज्य पदार्थों की वर्तमान कमी इसके कारणों और इस कमी को दूर करने के उपायों का उल्लेख कर सकता है। पंचवर्षीय योजनाओं और सहकारी कृषि के सम्बन्ध में छात्रों को जानकारी दे सकता है। भोजन के मामले में किस प्रकार विभिन्न भू भाग एक दूसरे पर आश्रित रहते हैं इसकी विवेचना कर सकता है। इस प्रकार जिन जिन प्रान्तों में सामाजिक अध्ययन को इतिहास भूगोल और नागरिक शास्त्र के रूप में अलग अलग करके पढ़ाया जाता है

---

1 It is possible to preserve the essential concept of the subject even where it is a compendium of History, Geography civics etc

उन प्रान्तों में भी समाज अध्ययन के मूल रूप का दर्शन कराया जा सकता है किन्तु यह कहना कि इतिहास, भूगोल अर्थ शास्त्र, नागरिक शास्त्र का अलग अलग रूप से अध्ययन उन सामाजिक मान्यताओं को जन्म दे सकता है जिनको सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य माना जाता है, भ्रामक है। इस प्रकार म विच्छिन्न रूप से दिया गया ज्ञान बालकों की समझ से वस्तु बन गई है। बहुत से विषयों के थोड़े-थोड़े अंशों को पढ़ाने से छात्रों में इन विषयों के प्रति अरुचि सी पैदा हो गई है। यदि सामाजिक अध्ययन के समन्वित पाठ्यक्रम से एक समृद्ध और व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है तो अल्प वयस्क छात्रों पर अनेक विषयों का भार लादना न तो तर्कसगत ही प्रतीत होता है और न आवश्यक ही।

समाज शास्त्र एव सामाजिक अध्ययन का अन्तर स्पष्ट करते हुए यह कहा गया था कि एक विषय मानवीय सम्बन्धों का सैद्धान्तिक रूप प्रस्तुत करता है और दूसरा क्रियात्मक व्यावहारिक रूप। दूसरे शब्दों में सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का मानसिक ज्ञान मात्र देने में अपने कर्तव्य की इति श्री ही नहीं समझ बैठता वरन वह अपने छात्रों में उचित आदर्शों, दृष्टिकोण, मानसिकता एव कुशलताओं को पैदा करता है जो उसे सफल नागरिक बनने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

'The materials of social studies provide the basis for making the world of today intelligible to the pupils for training them in certain skills and habits and for inculcating attitudes and ideals that will enable them to take their places as efficient and effective members of a democratic society

Bining and Bining

सामाजिक अध्ययन इस प्रकार मानवीय सम्बन्धों के परिज्ञान के द्वारा दूसरों को इस योग्य बनाता है कि वे आगे चलकर समाज के सदस्य और नागरिक के रूप में भली प्रकार जीवनयापन कर सकें। किन्तु मानवीय सम्बन्ध पल पल पर बदलते जाते हैं। हमारे भौतिक वातावरण में निरन्तर परिवर्तन आता जाता है। सामाजिक उत्तरदायित्व नित्य नया रूप लेते जाते हैं। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के आदर्श प्रति क्षण बदलते जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में सामाजिक अध्ययन के विद्यार्थी को नित्य जागरूक रहना पड़ता है क्योंकि उसके क्षेत्र का विस्तार दिन प्रतिदिन व्यापक होता जाता है।

अत सामाजिक अध्ययन के विद्यार्थी को निम्नांकित बातों पर ध्यान देना पड़ेगा यदि मानव जीवन को सुगम बनाना है—

१—सामाजिक उत्तरदायित्वों का परिज्ञान

२—वैज्ञानिक प्रगति का वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एव राजनीतिक जीवन पर प्रभाव

३—सामुदायिक जीवन का नियन्त्रण करने वाले सिद्धान्तों का सूक्ष्म विवेचन

४—परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र के पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञान

५—अपेक्षित राष्ट्रीयता तथा अन्तर्राष्ट्रीयता के भावों को जागृत करने वाली योजनाओं का अध्ययन।

संक्षेप में,

(i) समाज शास्त्र का अध्ययन मानव और उसके समुदायों का अध्ययन है।

(ii) यह वह शास्त्र है जो छात्र और छात्राओं को अपने वातावरण को समझने में सहायक होता है।

(iii) यह वह अध्ययन है जो यह बतलाता है कि व्यक्ति किस प्रकार स्थानीय राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर जीवनयापन करते हैं।

(iv) यह वह शास्त्र है जो इस बात की सूचना देता है कि सम्पूर्ण संसार के सभी राष्ट्र किस प्रकार एक दूसरे पर आश्रित हैं।

(v) भूतकाल के इतिहास का ज्ञान देकर यह शास्त्र इस बात की सूचना देता है कि मानव भूत की असफलताओं से किस प्रकार अपना बचाव कर साथ साथ रह सकता है।

(vi) समाज की विभिन्न संस्थाओं का उद्गम और विकास किस प्रकार हुआ है इसका परिचय देता है।

(vii) यह समसामयिक समस्याओं को समझने में हमारी सहायता करता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

2 1 What is the modern concept of Social Studies ? Illustrate with examples (L T 1958)

2 2 Social Studies is an integrated subject Discuss the statement Bring out the limitations and possibilities of integration of Geography Civics and History in class VI in the Junior High School (Agra B T 1960)

· ३ ·

समाज-अध्ययन का अध्यापन क्यों ?

३ १ जिस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यो का व्यक्ति समाज, देश और राष्ट्र की
आवश्यकतायें निर्धारित किया करती हैं उसी प्रकार किसी विषय वस्तु को पाठ्यक्रम
म रखने का आयोजन व्यक्ति समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओ पर निभर रहता
है। जिस समय व्यक्ति समाज और राष्ट्र के सम्बन्ध इतने जटिल न थे जितने कि
वतमान युग म हैं उस समय भाषा साहित्य इतिहास आदि विषयो का अध्ययन
काफी था। सामाजिक बातो की जानकारी के लिये बालको को शिक्षित करने की
जरूरत न थी। वे अपने परिवार अपने गाव या कस्बे के छोटे से समुदाय म रहकर
उन सब सूचनाओं को व्यवहारों को सीख लिया करते थे जो उनको सामाजिक बनाने
मे सहायक होती थीं। किन्तु आज का भारत आज का ससार उस भारत और उस
ससार से भिन्न होगया है। गत ५० वर्षों म वज्ञानिक अनुसधानो तथा अन्वेषणों ने
ससार के भौतिक सामाजिक एव सास्कृतिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित कर दिया
है। मानव समुदाय की भौगोलिक परिधि छिन्न भिन्न हो चुकी है। मानव जाति
सिमटकर विश्व मानव समुदाय म बदल चुकी है। विज्ञान ने इस देहाती देश को
ट्यूबवल, बिजली, समानियम सल्फेट देकर आर्थिक और भौतिक परिवतन उपस्थित
कर दिये हैं। अपनी आवश्यकताओ की सन्तुष्टि के लिये आज का ग्रामीण शहर पर
निभर रहने लगा है उसका स्वावलम्बन नष्ट हो चुका है। स्वतत्रता के बाद
ग्रामोत्थान की चेष्टायें ग्राम पचायतो के विकास काय, गावो म नए मानवीय सम्बन्ध
स्थापित कर रहे हैं और नये सामाजिक उत्तरदायित्वो का भार ग्रामीण जनता
पर डाल रहे हैं। सामुदायिक विकास योजनाएँ, राष्ट्रीय प्रसार सेवायें, ग्रामीण
विश्वविद्यालय ग्रामीण वातावरण की काया पलट करने में लगे हुए है।

शहरो का भी यही हाल है। उनमे भी वज्ञानिक एव औद्योगिक उन्नति के
कारण चतुमुखी परिवतन हो रहे हैं। उनका आर्थिक व सामाजिक ढाचा बदल रहा
है। इन परिवतनों के कारण हमारे समस्त मानवीय सम्बध पचीदे होगये हैं।
हमारे ऊपर नई नई जिम्मदारियाँ लदती चली जा रही हैं।

समाज म जिस द्रुत गति से परिवतन आ रहा है उस गति से शिक्षा और
शिक्षालयों में परिवतन नही आया। फलत शिक्षा और जीवन के बीच एक रेखा सी
खिचती चली जा रही है। जीवन की मांगो को जब शिक्षा पूरी नही कर पाती तो

इस आवश्यकता का अनुभव होता है कि शिक्षा क्षेत्र में कोई ऐसा ज्ञान क्षेत्र सन्निविष्ट किया जाय जिससे यह ऐसा सम्भव हो सके और व्यक्ति आज के संसार के उपयुक्त बन सके। माध्यमिक संस्थाओं ने पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन का प्रवेश इसलिये किया गया है कि वह समाज की इस आवश्यकता की पूर्ति कर सके।

हमारे समाज के उद्देश्य— यद्यपि हमारे देश का सांस्कृतिक आधार अतीत में स्थित है किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इसकी सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में महान परिवर्तन उपस्थित हो गये हैं। इन सामाजिक परिवर्तनों के फल स्वरूप भारत में एक वर्गहीन शोषण रहित सर्वोदयी समाज की स्थापना हो रही है। राजनीतिक परिवर्तनों के कारण एक धर्म निरपेक्ष गणतन्त्र की स्थापना हो चुकी है जिसका आधार स्तम्भ स्वतन्त्रता समता बन्धुत्व और न्याय है। इस गणराज्य का प्रत्येक नागरिक अब न केवल राजनीतिक चेतना और राजनीतिक सक्रियता का हामी है वरन् वह समस्त सामाजिक परम्पराओं को संशोधित करने का दावा ले रहा है जिससे वर्ग जाति तथा धर्म जनित भेदभावों का उन्मूलन हो सके। वह न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता का अपना आदर्श मानकर चल रहा है परन्तु आर्थिक स्वावलम्बन भी चाहता है। वह अपने आर्थिक साधनों को इस प्रकार नियोजित करना चाहता है कि अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठा सके। आधुनिक भारत की सामाजिक आर्थिक राजनैतिक सभी मांगें ऐसी हैं जिनकी पूर्ति के लिए भारतीय नागरिक को प्रशिक्षित करना है।

शिक्षा के उद्देश्य—समाज के उद्देश्यों, आदर्शों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति शिक्षा द्वारा होती है। शिक्षा स्वयं सोद्देश्य प्रक्रिया है और ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमारे समाज के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। बालक के व्यवहार में उसके आचरण में परिवर्तन लाना ही शैक्षणिक क्रियाओं का लक्ष्य हुआ करता है। ये शैक्षणिक क्रियायें ही पाठ्यक्रम निश्चित करती हैं। जिस प्रकार गणित की शैक्षणिक क्रियाओं से बालक में तर्क शक्ति का विकास किया जाता है जिस प्रकार भाषा की शैक्षणिक क्रियाओं से उसमें बोलने, लिखने पढ़ने की क्षमता पैदा की जाती है उसी प्रकार सामाजिक अध्ययन सम्बन्धी क्रियाओं से भी बालक के आचरण में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया जाता है। हम बालक को सामाजिक बनाना चाहते हैं बस यही सामाजिक अध्ययन का मुख्य लक्ष्य है। व्यक्ति मूलतः एक सामाजिक जीव है और उसे समाज में ही रहना है अतः बालक को शुरू से ही समाज में रहने का ढंग सिखाना होगा। विद्यालय समाज का लघु रूप है। इसी छोटे से समाज में उसे रखकर नागरिक जीवन के लिये आवश्यक बातों की शिक्षा देनी होगी। उसके व्यवहार में इस प्रकार के परिवर्तन लाने होंगे कि वह सर्वोदयी समाज का एक प्रगतिशील सदस्य बन सके और अपने उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह निभा सके।

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा के उद्देश्य—सामाजिक अध्ययन की शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागो म बांट सकत हैं —

सामान्य और विशिष्ट ।

सामान्य उद्देश्यों म निम्नांकित उद्देश्यो को सम्मिलित किया जा सकता है —

१—वातावरण के माध्यम से सामाजिक ज्ञान की वृद्धि ।

२—लोकतंत्र म आस्था व विश्वास का विकास ।

३—स्वस्थ सामाजिक मान्यता का निर्माण ।

४—सामाजिक कार्यों म कौशल की वृद्धि ।

५—समाज सम्मत आचरणों का अनुसरण करन की क्षमता की प्राप्ति ।

६—सहयोग की रीतियों की जानकारी तथा सहयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण ।

७—उत्तरदायित्व लेने तथा उसे निभाने की क्षमता का विकास ।

८—अन्य जातियों, अन्य राष्ट्रों अन्य धर्मावलम्बियो के प्रति सम्मान एव सहिष्णुता की भावना का विकास ।

९—अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का आविर्भाव तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का सृजन ।

१०—विचारशील उपभोक्ताओं राष्ट्रीय योजनाओं म सक्रिय भाग लेने वाले सुयोग्य नागरिकों की उत्पत्ति ।

किसी विषय की शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यो का निश्चय करने के लिये हम साधारणत निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना पड़ता है —

१—समाज एव उनकी आवश्यकतायें ।

२—राष्ट्र का जीवन दर्शन ।

३—विषय की प्रकृति एव क्षेत्र ।

४—मनोविज्ञान ।

५—विशेषज्ञों की उस विषय म सम्बन्ध रखने वाली सम्मतियां ।

इन बातो को ध्यान म रखकर ही हम यह निश्चित करते हैं कि उस विषय के शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य (objectives) क्या होने चाहिये । इन उद्देश्यों को संक्षेप म ६ वर्गों म बांटा जा सकता है —

१—सामाजिक ज्ञान सम्बन्धी उद्देश्य (knowledge objectives) ।

२—प्रयोग उद्देश्य (application objectives) ।

३—योग्यताओं (abilities) और क्षमताओं के विकास से सम्बन्ध रखने वाले उद्देश्य ।

४—सामाजिक कार्यों मे कौशल (skill) से सम्बन्ध रखने वाले उद्देश्य ।

५—अभिवृत्तियां (attitude) म सुधार लाने से सम्बन्धित उद्देश्य ।

६—सांस्कृतिक उद्देश्य (appreciation)

(१) सामाजिक ज्ञान की उपलब्धि

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है सामाजिक परिस्थितियों और सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझने की शक्ति पैदा करना। इसलिए हम बालकों को सामाजिक अध्ययन सम्बन्धी पदों (terms) और प्रत्ययों (concepts) का ज्ञान देते हैं उन्हें विभिन्न सामाजिक प्रवृत्तियों और आन्दोलनों से अवगत कराते हैं। उनको कार्य कारण का भेद वर्तमान का, साधन साध्य का और ऐतिहासिक अनुभवों का सम्बन्ध बताना चाहते हैं। सामाजिक संस्थाओं का आपसी सम्बन्ध क्या है ? स्थानीय, प्रान्तीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासकीय प्रणालियों का रूप क्या है ? इन प्रश्नों से सम्बन्धित तथ्यों का भी ज्ञान बालकों को दिया जाता है।

यदि हम उसे योग्य नागरिक बनाना चाहते हैं तो इस प्रकार की ज्ञान की वृद्धि हमारा उद्देश्य बन जाता है। प्रत्येक नागरिक को प्रमुख सामाजिक स्थितियों नियम, संस्थाओं के सम्बन्ध में वांछित सूचनाएं ज्ञात होनी चाहिए क्योंकि इनके ज्ञान के बिना वह न तो अपने सामाजिक वातावरण को समझ सकता है और न अपने कर्तव्यों का निर्धारण ही कर सकता है। सूचनाओं एवं तथ्यों के ज्ञान के बिना किसी सामाजिक बात या समस्या पर सोच नहीं सकता। स्थानीय स्तर पर हम ग्राम पंचायत उसके कार्य एवं संगठन अथवा नगरपालिका तथा उसके कार्यों एवं संगठन का ज्ञान आवश्यक है। प्रान्तीय स्तर पर जिला बोर्ड राज्य के विधान मण्डल, मंत्रिमंडल, राज्यपाल, राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संसद प्रधानमन्त्री के कर्तव्य आदि बातों का ज्ञान आवश्यक है। वातावरण के ज्ञान के लिये प्रत्येक नागरिक को अपने भौगोलिक व ऐतिहासिक वातावरण का ज्ञान भी होना आवश्यक है। हिमालय विन्ध्य, गंगा, यमुना मानसून, हरे भरे मैदान आदि ऐसे भौगोलिक तत्व हैं जिन्होंने हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रखा है रामायण महाभारत बुद्ध अशोक तुलसी मीरा शिवाजी, लक्ष्मीबाई, ताज और गया एसे ऐतिहासिक तत्व हैं जिन्होंने वर्तमान के निर्माण में सहयोग दिया है अतः इन सब की जानकारी जरूरी है। इनके अतिरिक्त आज के युग में रोज ही अनेक घटनाएं समस्याएं अथवा आन्दोलन उठते रहते हैं जिनकी जानकारी प्रत्येक नागरिक को होनी चाहिए। किन्तु हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि छात्रों के मस्तिष्क में विभिन्न सूचनाएँ असम्बद्ध रूप में प्रवेश न कराई जाय। इसलिए हम कार्य कारण भूत वर्तमान साधन-साध्य से सम्बन्धित ज्ञान पर जोर देते हैं।

सामाजिक अध्ययन छात्रों को अपने वातावरण को समझने की क्षमता प्रदान करता है अतः बालकों को इतिहास भूगोल नागरिक शास्त्र, अर्थ शास्त्र और समाज शास्त्र की उपयुक्त सामग्री की सहायता से उनकी परिस्थितियों का ज्ञान दिया जाता है। इतिहास भूतकाल की विफलताओं और सफलताओं का ज्ञान देता है भूगोल उन्हें अपनी भौगोलिक परिस्थितियों से परिचित कराता है। अर्थ शास्त्र

व्यक्तिगत मित व्ययता का आदेश देता है। नागरिक शास्त्र विभिन्न समुदायों के आपसी सम्बन्धों, मनुष्य के उनके प्रति कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान देकर मनुष्य मनुष्य राष्ट्र और राष्ट्र की पारस्परिक आश्रयता का बोध कराता है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन द्वारा हम छात्र को मानव जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित ज्ञान की जानकारी देते हैं।

संक्षेप में सामाजिक अध्ययन के शिक्षक अपने छात्रों को निम्न प्रकार की सूचनाएं देकर उनके ज्ञान की अभिवृद्धि करते हैं —

(१) सामाजिक प्रत्यय और पदों का ज्ञान

(२) सिद्धान्त और नियमों का ज्ञान

(३) कार्य कारण का सम्बन्ध, भूत वर्तमान का सम्बन्ध, साधन साध्य का सम्बन्ध, Chrono-logical sequence का ज्ञान

(४) सामाजिक संस्थाओं के प्रकार स्थानीय, राज्यीय और राष्ट्रीय स्तरों पर प्रशासन सम्बन्धी machinery

सामाजिक अध्ययन के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम मनुष्य के भौतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा नागरिक अनुभवों का ज्ञान देते हैं।

(२) सामाजिक ज्ञान को प्रयोग करने की क्षमता का विकास

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का रूप ही व्यावहारिक होने के कारण इसकी शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य बालक में अर्जित ज्ञान को प्रयोग करने की क्षमता पैदा करना है। कोरा ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही कोई व्यक्ति सफल नागरिक नहीं बन सकता जब तक उस ज्ञान को प्रयोग में लाने की योग्यता उसमें पैदा न हो जाय। इसलिए सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का कर्तव्य बालक में निम्नलिखित योग्यताओं की वृद्धि करना है —

१—सिद्धान्तों नियमों एवं सामान्यीकृत तथ्यों का विशुद्ध प्रयोग करने की क्षमता

२—कार्य कारण, वर्तमान भूत तथा अन्य किसी सम्बन्ध को वास्तविक परिस्थिति में लागू करने की क्षमता

३—किसी सामाजिक समस्या को सुलझाने की क्षमता।

यदि बालक में इस प्रकार की योग्यताएं पैदा हो गई तो वह संगत तथ्यों का चयन और असंगत तथ्यों का परित्याग कर सकता है। उसमें भावी घटनाओं का अनुमान लगाने की शक्ति पैदा हो जाती है। जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन प्राप्त कर वह अनुकूल आचरण कर सकता है।

(३) अन्य योग्यताओं का विकास

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण से बालकों में निम्नलिखित योग्यताओं का विकास भी सम्भव है —

(अ) सामाजिक अभियोजनशीलता (Social adjustment)

(ब) आलोचनात्मक चिन्तन (Critical thinking)

(स) विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता (Expression)

(द) अध्ययन एवं भाव ग्रहण करने की योग्यता (Reading & Comprehension)

(य) गम्भीर निर्णय लेने की शक्ति (Suspended judgement)

सामाजिक अभियोजनशीलता से हमारा तात्पर्य उस शक्ति के विकास से है जिसके कारण बालक समाज की अभिनव परिस्थितियों में अपने को नियोजित कर लिया करता है। वह किसी समस्या पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने में समर्थ हो सकता है। हमारे जीवन में प्रायः ऐसी स्थितियाँ रोज उत्पन्न होती रहती हैं जो समस्यापूर्ण या द्वन्द्वात्मक हों। ऐसी स्थितियों में पड़ने पर सामाजिक अध्ययन का प्रशिक्षित व्यक्ति आलोचनात्मक ढङ्ग से सोचने विचारने और उचित निर्णय पर पहुंचने में समर्थ हो सकता है। यदि आज के नागरिक को आलोचनात्मक चिंतन की शक्ति प्राप्त नहीं होगी तो वह किसी भी सामाजिक समस्या को ठीक तरह से सुलझा न सकेगा। तार्किक शक्ति की कमी के कारण वह दूसरों के विषयुक्त प्रचारों का शिकार बन सकता है। अतः सामाजिक अध्ययन का एक विशिष्ट उद्देश्य यह भी हो सकता है कि इसके शिक्षण में हम बालकों में तर्क और निर्णय करने की शक्ति का विकास करें। किन्तु तर्क और निर्णय करने की शक्ति बालकों की आयु तथा उनके मानसिक स्तर पर भी निर्भर रहती है। मानसिक विकास के अनुसार ही इस शक्ति का विकास सम्भव है। मन्द बुद्धि बालक प्रायः सूचनाओं एवं तथ्यों का भली प्रकार समायोजन नहीं कर पाते। अतएव तार्किक चिंतन या निर्णय देते समय हम उनके मानसिक विकास को भी ध्यान में रखें।

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का उद्देश्य यह भी हो सकता है कि बालकों में स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय करने की योग्यता पैदा की जाय। यदि वे कुछ लेखकों की रचनाओं का अध्ययन स्वयं कर सकें और उनके वर्णित विचारों अथवा भावों को ग्रहण कर सकें तो सामाजिक अध्ययन के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी। विद्यालय के प्रांगण में उन्हें आज जितनी जानकारियाँ मिल रही हैं वे कल पुरानी पड़ सकती हैं क्योंकि आज की बदलती हुई दुनिया में नित्य ही नई बातें उत्पन्न होती रहती हैं। अतः जब तक आज का नागरिक स्वाध्याय के द्वारा इस परिवर्तनशील संसार से अपना सम्पर्क न स्थापित रख सकेगा तो निश्चय ही वह सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह न कर सकेगा। स्वाध्याय प्रशिक्षण निरीक्षित अध्ययन की सहायता से किया जा सकता है। निरीक्षित अध्ययन से हमारा तात्पर्य बालकों को उस युक्ति का ज्ञान देना है जिससे स्वतन्त्रतापूर्वक अध्ययन करने के ढंग को अपना सकें।

If this objective is achieved no matter how much or how little knowledge or information has been obtained from the course, a great deal has been achieved for the pupil He has advanced in his intellectual life because he has acquired the ability to proceed independently in his studies and this removes him from constant dependence upon the teacher —Bining & Bining

(४) सामाजिक कार्यों को कुशलतापूर्वक निभाने की योग्यता का विकास

सामाजिक हित के कार्यों में कौशल प्राप्त कर लेना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यह कौशल तभी पैदा हो सकता है जब प्रारम्भ से ही इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाय। प्रारम्भ से ही बालकों में स्कूल असेम्बली, स्कूल न्यायालय, स्कूल सांस्कृतिक समिति आदि का संगठन करने की योग्यता का विकास करना होगा। स्कूल की सफाई से लेकर स्कूल के प्रबन्ध तक सभी सामाजिक कार्यों को निभाने की क्षमता पैदा करनी होगी।

सामाजिक कार्यों में कौशल पैदा करने के साथ साथ बालकों में निम्नलिखित कुशलताओं की अभिवृद्धि भी सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का उद्देश्य हो सकता है —

१—सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण कर सकने की कुशलता (Conducting socio-economic survey)

२—सामाजिक सहयोग का कौशल (Social participation)

३—प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की क्षमता (Making and presenting reports)

४—प्रकाशित एवं चित्रित वस्तु को पढ़ने की क्षमता (Reading printed, sketched and pictured material)

५—मानचित्र, चार्ट और ग्राफ तैयार करना (Making maps, charts and graphs)

(५) अच्छी आदतों, समाज सम्मत आचरण एवं उत्तम अभिवृत्तियों का विकास

१—अच्छी आदतों से तात्पर्य उन स्वस्थ आदतों से है जिनसे समाज के हित की रक्षा होती है। हमारी गन्दी आदतें समाज को खतरे में डाल सकती हैं। अतः सामाजिक अध्ययन का एक उद्देश्य यह भी है कि हम बालकों में शुरू से ही उठने-बैठने, चलने फिरने, पहनने ओढ़ने, खाने पीने से सम्बन्ध रखने वाली स्वस्थ आदतों का निर्माण करें।

२—हमारे उठने बैठने, चलने फिरने, खान-पीने से सम्बन्ध रखने वाली आदतों का स्वस्थ होना ही आवश्यक नहीं है वरन् इन सब कार्यों का समाज सम्मत होना भी आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक सामाजिक आचरण के पीछे हमारे समाज की परम्परा, नैतिक विचार, धार्मिक उद्देश्य छिपे रहते हैं। अतः यदि हम बालकों का

समाजीकरण उचित विधि म करना चाहते हैं तो हम उनम समाज सम्मत प्राचरणों का प्रतिष्ठापन करना होगा।

३—समाज सम्मत प्राचरण का प्रतिष्ठापन तभी हो सकता है जब बालकों म उत्तम प्रभिवृत्तियों का विकास हो सके। जब तक उनका दृष्टिकोण ही पूर्णत उचित न होगा तब तक उनका प्राचरण उत्तम नही माना जा सकता। समस्त वसुधा को कुटुम्ब मानकर चलने वाले समस्त विश्व म बन्धुत्व का दर्शन करने वाले व्यक्ति का प्राचरण समाज सम्मत माना जा सकता है प्रतएव हम प्रपने बालकों मे विश्व बन्धुत्व की प्रभिवृत्ति पैदा करनी होगी। विश्व बन्धुत्व की भावना उस व्यक्ति मे पैदा हो सकती है जिसम सहिष्णुता की मात्रा का प्राधिक्य हो। प्रत बालको में सहिष्णुता एव सहयोग की प्रभिवृत्ति के विकास पर बल देना होगा। सहिष्णुता के विकास क लिए यह प्रावश्यक है कि व्यक्ति म प्रपने सवेगो एव मनोभावो को नियन्त्रित करने की शक्ति हो। हरिजन प्रस्पृश्य हैं मुसलमान हमारे विरोधी हैं इन सब बातों का प्राधार सावेगिक है। प्रत यदि हम सहिष्णुता का विकास करना चाहते हैं तो हम सवेगो का नियन्त्रित करने का प्रशिक्षण देना होगा। सक्षेप म, जिन दृष्टिकोणो या प्रभिवृत्तियो का विकास हम प्रपने बालको म करना है वे निम्नलिखित हैं —

वस्तुनिष्ठता, राष्ट्रीयता, सत्यवादिता सहिष्णुता, सहकारिता विवेकपूर्ण प्राशावादिता।

सामाजिक प्रध्ययन के शिक्षक को हर कदम पर इन दृष्टिकोणों को विकसित करने का प्रयत्न करना होगा।

सक्षेप म, सामाजिक प्रध्ययन क शिक्षक को प्रपने छात्रों म निम्नलिखित प्रभिवृत्तियाँ पैदा करनी होगी —

१—समस्त ससार का कुटुम्बवत् समझना
२—समसामयिक घटनाप्रो को प्रालोचनात्मक दृष्टि से देखना
३—समाज के सभी सदस्यो क साथ सहिष्णुता की भावना का पैदा करना
४—सहयोग की भावना का उदय
५—सवेगो पर नियन्त्रण
६—रचनात्मक नेतृत्व

प्रत सामाजिक प्रध्ययन का उद्देश्य छात्रो को भौतिक सास्कृतिक प्रार्थिक, सामाजिक तथा नागरिक प्रनुभवो का ज्ञान देकर उनम ऐसी वृत्तियो तथा निपुणताप्रो का परिवद्धन तथा विकास करना है जो उन्हें समाज का उपयोगी सदस्य बना सकें।

Attitudes of scientific mindedness of loyalty of truthfulness of tolerance of cooperation of civic gratitude and above all of intelligent optimism are among the right attitudes that the teacher of Social Studies must seek at every opportunity to develop in his pupils

Bining & Bining

(६) सांस्कृतिक उद्देश्य

सामाजिक अध्ययन बालकों में सांस्कृतिक गुणों को उन्नयन करने में भी सहायक हो सकता है। वह मानवीय सांस्कृतिक निष्पत्तियों को समझने के योग्य बन सकता है। सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समुचित अनुभूति उसमें जाग्रत हो सकती है। मनुष्य की पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान भी उसे हो सकता है। संक्षेप में समाज अध्ययन का सांस्कृतिक उद्देश्य छात्रों में मानव मात्र की सांस्कृतिक निष्पत्ति और पारस्परिक निर्भरता को समझने की शक्ति पैदा करनी है।

३.२ पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन का महत्व और स्थान

सामाजिक अध्ययन के जिन उद्देश्यों का उल्लेख पीछे किया जा चुका है वे उद्देश्य समाज और उसकी आवश्यकताओं व्यक्ति देश और राष्ट्र की माँगों की पूर्ति करते हैं। यदि इस विषय का अध्ययन उचित रूप से किया जाय तो वह इन लक्ष्यों की पूर्ति कर सकता है। हम इस विषय को माध्यमिक स्तरीय शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाना है क्योंकि वह माध्यमिक शिक्षा के उन उद्देश्यों की पूर्ति करता है जिनकी व्याख्या अनेक समितियों, गोष्ठियों और शिक्षा विचारकों ने की है।

निम्न माध्यमिक स्तर पर प्रायः हम लोग सामाजिक अध्ययन को पाठ्य पटल में स्थान देते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल इतिहास, अर्थ शास्त्र और नागरिक शास्त्र का पृथक पृथक रूप से अध्यापन करते हैं। इसका मुख्य कारण है बालमनोविज्ञान। अल्प वयस्क बालकों को अपने दैनिक जीवन की ठोस स्थितियों से अनुभव प्राप्त करने में सुविधा का आभास होता है। अतः छोटी कक्षाओं में दैनिक जीवन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए उनके पाठ्य पटल में सामाजिक अध्ययन को स्थान दिया गया है। वर्तमान शताब्दी से पूर्व सामुदायिक जीवन सीधा सादा था। समुदायों का आकार छोटा था, जीवन की जटिलतायें इतनी अधिक नहीं थी अतः समाज के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान छोटे छोटे बालकों को अपने परिवार में ही मिल जाता था। किन्तु अब सामाजिक परिस्थितियां बदल चुकी हैं। परिवार के अतिरिक्त दूसरी संस्था जो उन्हें इस प्रकार का व्यवस्थित ज्ञान दे सकती है, वह है स्कूल। अतः विद्यालय को प्रबन्ध करना है समाज और वातावरण के गहरे ज्ञान और सूचनाओं को छोटे छोटे बालकों को देने का।

गत दो दशकों से पूर्व विद्यालयों में भी इस प्रकार का ज्ञान विभिन्न विषयों के अन्तर्गत देने की व्यवस्था थी किन्तु जब उस व्यवस्था के दोष प्रगट होने लगे तब शिक्षा विचारकों ने सामाजिक अध्ययन की इन कमियों को पूरा करने के लिए पाठ्य पटल में स्थान दिया। जब तक शिक्षा से हमारा तात्पर्य ज्ञान दान हो या तब तक तो इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र को निम्न माध्यमिक स्तर पर स्थान देना उचित था किन्तु जब से हम शिक्षा को सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया मानने लगे हैं जब से हम शिक्षितों में सामाजिक निपुणता, सामाजिक चेतना, सत्यवादिता, सहिष्णुता, सहयोग आदि अभिवृत्तियों का विकास करना अपना महत्वपूर्ण कार्य

समझने लगे हैं तब से सामाजिक अध्ययन को शिक्षा क्रम में उचित स्थान मिलने लगा है। पाठशाला के अन्दर अथवा बाहर छात्रों का हम वे सभी प्रकार के अनुभव देना चाहते हैं जो उनके व्यक्तित्व के विकास में सहयोग दे सकें।

व्यक्तित्व के विकास को मानवतावादी नागरिक भले ही शिक्षा का चरम उद्देश्य मान लें किन्तु समाज शास्त्री बालक को शिक्षा इसलिए और देना चाहता है कि वह आगे चलकर समाज के कार्यों में अपना पूरा भाग ले सके। लोकतन्त्र की भी यही पुकार है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय निर्णयों में अपनी राय दे, उसे आत्माभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर मिले उसमें सामाजिक जागरूकता का उदय हो। सामाजिक अध्ययन समाज शास्त्री की इन माँगों की भी पूर्ति कर सकता है। समाज राष्ट्र और सम्पूर्ण जगत की समस्याओं को समझने संसार की घटनाओं का मूल्यांकन करने लाभ हिंसा अन्याय, शोषण और असमानता के दुष्प्रभावों से मुक्त उत्तम सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में सहयोग देने, विश्व संघ का समर्थ और सुयोग्य बनने के लिए समाज शास्त्रियों की इस माँग के कारण ही सामाजिक अध्ययन के शिक्षण की आवश्यकता की अनुभूति होने लगी है। अतः बालकों की शिक्षा व्यवस्था में ऐसे अनुभवों को भी स्थान दिया जाने लगा है जो उनमें सामाजिक निपुणता का संचार कर सकें। माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन का समावेश इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया है।

विकासवान और प्रगतिशील राष्ट्र के लिए—ऐसे राष्ट्र के लिए जिसे हाल ही में स्वतन्त्रता मिली है और उस स्वतन्त्रता की रक्षा करना जिसका प्रथम कर्त्तव्य हो—ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो स्वार्थ का परित्याग कर सकें। स्वार्थ का परित्याग अथवा इस वृत्ति का दमन तभी हो सकता है जब वे सामाजिक कर्त्तव्यों तथा मानवता को जोड़ने वाले बन्धनों को समझ सकें तथा अपने दुश्मनों से देश की रक्षा करने के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर सकें। कोरे सिद्धान्तों की शिक्षा नागरिक शास्त्र दे सकता है किन्तु उन सिद्धान्तों का प्रयोग किये बिना न तो देश की स्वतन्त्रता की रक्षा ही हो सकती है और न देश की रक्षा ही। भारत के बच्चे बच्चे को इस बात का ज्ञान होना जरूरी है कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है। मत की पर्ची पर निशान लगाना, कर देने का ज्ञान होना अथवा न होना ही काफी नहीं है भारत के बच्चों को इस बात का ज्ञान देना है कि वर्तमान समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार की जा सकती है और वे समाज के कार्यों में अपना भाग किस प्रकार ले सकते हैं। इन व्यावहारिक उपयोगिताओं को ध्यान में रखकर सामाजिक अध्ययन को पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान दिया गया है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

3 1 Discuss the aims and objectives of teaching Social Studies in our schools today in view of the recent socio economic changes in the country (Agra B T 1960)

3 2 What is the purpose of teaching Social Studies in schools ? (Agra B T 1963)

: ४ :

सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम

४.१ शिक्षा और समाज का अभिन्न सम्बन्ध है क्योंकि प्रत्येक विषय की शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर चला करती है। हम अपने शिक्षालयों से समाज के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते हैं। अतः विद्यालयों में अपने बालकों के सम्मुख इस प्रकार सीखने की क्रियायें (learning activities) उपस्थित करते हैं जिनसे समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हो अथवा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हो। इन सीखने की क्रियाओं का सुसंगठन एवं उत्तम चयन शिक्षक को करना है। जिन सामान्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर सामाजिक अध्ययन का शिक्षक उनका चयन कर सकता है नीचे दिये जाते हैं —

(१) पाठ्यक्रम उद्देश्य सापेक्ष्य हो—समाज अध्ययन की पाठ्य सामग्री उन उद्देश्यों की पूर्ति करे जिनका पहले वर्णन किया जा चुका है क्योंकि पाठ्यक्रम स्वयं साध्य नहीं है बल्कि एक साधन मात्र है जिसके द्वारा हम समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि चाहते हैं। इसकी उपमा एक यंत्र से दी जा सकती है जिसकी सहायता से उद्देश्य की पूर्ति हो सके।

The curriculum is the tool in the hands of the teacher to mould his pupil according to his objectives in his school

उद्देश्य विहीन क्रियाएं जिनका संकलन पाठ्यवस्तु में किया जाता है, निरर्थक मानी जाती हैं। उद्देश्यों का आधार मानकर ही पाठ्यक्रम सम्बन्धी अथवा सहगामी क्रियाओं का भवन तैयार किया जाता है। समाज अध्ययन के उद्देश्यों का विस्तृत उल्लेख पीछे किया जा चुका है। यदि हम समाज अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहते हैं तो उन्हें ध्यान में रखकर चलना होगा। मान लीजिए हम समाज अध्ययन की शिक्षा द्वारा छात्रों में असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण का विकास अथवा अन्य धर्मावलम्बियों के साथ सहिष्णुता एवं सहानुभूति का संचार करना चाहते हैं तो हम बालकों के समक्ष ऐसी क्रियाओं अथवा सूचनाओं को प्रस्तुत करना होगा जिनसे इस प्रकार की सहिष्णुता उनमें पैदा हो सके।* यदि सामाजिक अध्ययन का एक उद्देश्य अन्य राष्ट्रों अथवा देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना है तो सामाजिक अध्ययन में ऐसी पाठ्य वस्तु का चयन करना होगा जो छात्रों में इस मैत्री भाव का विकास कर सके। आप चाहें तो दूसरे देशों के बच्चों के घरेलू जीवन का अध्ययन करा सकते

---

* Curricular materials have been selected in order to carry out some objectives If there is no discerning connection between objectives and materials one or the other object to be modified

—Wesley Teaching of Social Studies pp 106

हैं अथवा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ा कर एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर आश्रयता का बोध करा सकते हैं। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत रखी गई प्रत्येक पाठ्य वस्तु किसी न किसी सामाजिक उद्देश्य की ओर संकेत करती है।

इसी प्रकार यदि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा का एक उद्देश्य छात्रों को सामयिक घटनाओं की जानकारी देकर यह बताना है कि उनके चारों ओर क्या हो रहा है तो भारत और पाकिस्तान के झगड़े चीन द्वारा भारत पर आक्रमण आदि सामयिक बातों की जानकारी दी जा सकती है।

जहाँ तक जानकारियाँ के देने अथवा क्षमताओं को विकसित करने का प्रश्न है हम नागरिक उद्देश्यों का ध्यान में रखकर ही सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु का चयन करना होगा। किन्तु यदि हम अपने छात्रों में उन अभिवृत्तियों, आदतों अथवा गुणों का विकास करना है जिनका उल्लेख पीछे किया जा चुका है तो हम कुछ चतुराई से काम लेना होगा अर्थात् सामाजिक उद्देश्यों के अतिरिक्त छात्रों के ज्ञान के स्तर, अध्यापक की योग्यता, विद्यालय के कलैण्डर की परिसीमाओं को भी ध्यान में रखना होगा। यदि अन्य बातें स्थिर रहें तो समाज अध्ययन के पाठ्यक्रम का चुनाव करते समय सबसे पहले हमें यह देखना होगा कि इस विषय या क्षेत्र के उद्देश्यों की प्राप्ति में जो सामग्रियाँ सहायक होंगी उनको ही समाज अध्ययन के पाठ्यक्रम में किस प्रकार स्थान दिया जाय।

(२) पाठ्य वस्तु बालकों की आवश्यकताओं, रुचियों मूल प्रवृत्तियों तथा उनके विकास स्तर के अनुरूप हो—समाज अध्ययन के निर्धारित उद्देश्य इस विषय के पाठ्यक्रम का निर्देश तो अवश्य करते हैं किन्तु केवल इन निर्देशों के आधार पर पाठ्यक्रम का आयोजन नहीं हो सकता। हमें यह भी निश्चित करना है कि जो जो सामग्रियाँ हमारे उद्देश्यों द्वारा निर्देशित हो उनमें से कौन कौन सी सामग्रियाँ किन किन रूपों में छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों, मूलप्रवृत्तियों तथा उनके मानसिक विकास के स्तर के अनुरूप हैं। समाज अध्ययन के लिये सभी उपलब्ध सामग्रियाँ छात्रों की योग्यता के अनुकूल भी नहीं होती। जो सामग्रियाँ अनुकूल भी होती हैं वे कठिनाई के विचार से कई श्रेणियों और स्तरों की हुआ करती हैं। जो सामग्री छठवीं कक्षा के बालकों को कठिन मालूम पड़ती हैं वही सातवीं कक्षा के बालकों के लिए सुबोध सिद्ध हो सकती हैं। पाठ्यक्रम के नियोजक अपने परिपक्व दृष्टिकोण से प्रायः ऐसी सामग्री का समावेश समाज अध्ययन के पाठ्यक्रम में कर दिया करते हैं जो बालकों की शक्ति के बाहर होती है। सामग्री के कठिन होने पर छात्रों में विषय के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है। अतएव यदि हम पाठ्यवस्तु को बालकों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं मानसिक व शारीरिक व सामाजिक विकास के स्तर के अनुकूल बनाना चाहते हैं तो वयस्क व्यक्तियों के विचारों अथवा उनके दृष्टिकोणों का बहिष्कार करना होगा।